

सनक सम्राट राजकुमार

'सौ गुनहगार भले ही छूट जाएं पर एक बेगुनाह को सजा नहीं होनी चाहिए', शायद इसी बात को ध्यान में रखते हुए अपनी एक गलती पर भूषण पंडित यानी राजकुमार ने पुलिस इंस्पैक्टर की नौकरी छोड़ दी। फिल्मों में अपने भविष्य की तलाश की और उसे अपना कैरियर बनाया। अच्छा ही हुआ नहीं तो हम राजकुमार जैसे बेजोड़ अदाकार की अदाकारी देखने से वंचित रह जाते। पिता की अकाल मृत्यु के कारण राजकुमार अपनी आगे की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके और रोजी-रोटी की तलाश में मुंबई आ गए। यहां आने के बाद उन्हें पुलिस में सब इंस्पैक्टर की नौकरी मिल गयी। इस नौकरी के दौरान ही इनकी मुलाकात फिल्म निर्देशक नाजम नकवी से हुई और ये पुलिस इंस्पैक्टर की नौकरी छोड़ फिल्मों में आ गए।

'रंगीली' (1952) से अपने कैरियर का श्रीगणेश करने वाले राजकुमार की शुरुआती तीनों फिल्में, 'आबशार', 'लाखों में एक' और 'घमंड' कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़ सकीं। 'मदर-इंडिया' (1957) के बाद राजकुमार को कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। 'पैगाम', 'दिल एक मंदिर', 'जिंदगी', 'नील कमल', 'दिल अपना और प्रीत पराई' जैसी ढेरों उत्कृष्ट फिल्में राजकुमार ने दीं।

'हिन्दुस्तान की कसम' (1973) हीरो के रूप में उनकी आखिरी फिल्म थी। इसके बाद वाली पारी भी राजकुमार की बड़ी महत्वपूर्ण रही। इस दरम्यान इन्होंने ढेरों फिल्मों में केन्द्रीय भूमिका और सह-नायकी में अपना जबरदस्त प्रभाव छोड़ा। जिनमें 'कर्मयोगी', 'चम्बल की कसम', 'बुलंदी', 'कुदरत', 'धर्मकांटा', 'राजतिलक', 'शरारा', 'इतिहास', 'मरते दम तक', 'महावीरा', 'जंगबाज', 'सूर्या', 'पुलिस पब्लिक', 'सौदागर', 'इंसानियत के देवता', 'बेताज बादशाह', 'जवाब' और 'गॉड एंड गन' विशेष तौर पर उल्लेखनीय रहीं।

वैसे तो कैरियर के प्रारम्भ में ही इन्होंने 'मदर इंडिया' में रुटीन और टाइप्ड हीरो से हटकर अलग तरह की भूमिका निभायी थी शायद इसीलिए ये परिपक्व रोल (चरित्र) के लिए निर्माताओं की पहली पसंद बन गए। 'पैगाम', 'उजाला', 'दिल एक मंदिर' आदि ने इन पर एक तरह से द्वितीय हीरो का ठप्पा लगा दिया।

फिल्म में मुख्य हीरो की भूमिका हो या सह-अभिनेता की, राजकुमार अपने साथी कलाकारों पर हावी रहे। वह चाहे 'पैगाम' के दिलीप कुमार हों या 'उजाला' के शम्मी कपूर, 'मदर-इंडिया' के सुनील दत्त हों या 'काजल' के धर्मेन्द्र, 'मर्यादा' के राजेश खन्ना हों या 'चम्बल की कसम' के शत्रुघ्न सिन्हा, 'मरते दम तक' के ओमपुरी हों या 'पुलिस पब्लिक' के नसीरुद्दीन शाह सभी इनके सामने फीके रहे। एक नाना पाटेकर ही ऐसे अभिनेता रहे जो 'तिरंगा' में अपने स्ट्रांग कैरेक्टर की वजह से राजकुमार के प्रभाव के आगे बच निकलने में कामयाब रहे।

'नील कमल' का मूर्तिकार हो या 'काजल' का शराबी-मोती बाबू, 'वक्त' का राजा हो या 'कर्मयोगी' का स्मगलर, 'मरते दम तक' का डॉन हो या 'बुलंदी' का प्रोफेसर, 'चम्बल की कसम' का डाकू- बदन सिंह हो या 'सूर्या' का कलैक्टर राजपाल चौहान, 'एक से बढ़कर एक' और 'कुदरत' का खलनायक हो या 'हीर रांझा', 'हमराज', 'मेरे हुजूर', 'लाल पत्थर' व 'पाकीज़ा' का प्रेमी, हर चरित्र राजकुमार ने बड़ी शिद्दत से जीया और दर्शकों के दिलों पर इसकी अमिट छाप छोड़ गए।

राजकुमार और धर्मेन्द्र में कभी नहीं बनी, फिल्म 'काजल' में दोनों के बीच असली फाइट शुरू हो गई थी। राजकुमार ने फिल्म 'आदमी और इंसान' इसलिए छोड़ दी कि उसमें इन्हें धर्मेन्द्र को हार पहनाना था। अमिताभ बच्चन अभिनीत सुपर हिट फिल्म 'जंजीर' की पहली पसंद राजकुमार ही थे। राजकुमार ने यह फिल्म इसलिए नहीं की कि वह प्रकाश मेहरा को निचले दर्जे का निर्देशक मानते थे। यह बात अलग है कि आगे चलकर सन 1987 में इन्होंने 'मुकद्दर का फैसला' साथ- साथ की। इनके लड़के पुरु को पहला ब्रेक 'बाल ब्रह्मचारी' से प्रकाश मेहरा ने ही दिया। अपने लड़के की पहली फिल्म देखने से पूर्व ही कैंसर की घातक बीमारी के चलते इस दुनिया से कूच कर गए।

राजकुमार फिल्म जगत में प्रिंस के रूप में प्रसिद्ध रहे। सिगरेट के शौकीन और गोल्फ के अच्छे खिलाड़ी होने के साथ-साथ वह उर्दू भाषा पर भी अच्छी पकड़ रखते थे। उर्दू की अच्छी जानकारी के चलते ही जब वह संवाद लेखक के

द्वारा लिखे संवाद से पूर्णतया संतुष्ट नहीं होते थे तो स्वयं अपने लिए दृश्य के अनुसार संवाद लिखने बैठ जाते थे। संवाद लेखकों द्वारा लिखे संवाद को अपने शब्दों में ढालकर अपने तकिया कलाम `जानी' की पुनरावृति अवश्य करते थे। यहां गौरतलब है कि `जानी' उनके कुत्ते का नाम था।



राजकुमार अनुशासन प्रिय और उसूलों के पक्के थे। यही वजह थी कि उम्र के आखिरी पड़ाव पर भी राजकुमार पर फिल्मों की सफलता-असफलता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फिल्मों की सफलता-असफलता को लेकर वह कभी अति उत्साहित या हतोत्साहित नहीं हुए। ऐसा नहीं की उनकी कोई फिल्म सफल हो गई तो उन्होंने अपनी प्राइस दुगुनी कर दी या असफलता पर घटाने के लिए मजबूर हो गए। फिल्में वह अपनी शर्तों पर करते थे। रविवार को शूटिंग नहीं करनी है तो बस नहीं करनी है। राजकुमार में अभिनय और स्वाभिमान दोनों ही कूट-कूट कर भरा था। 20 लाख लेते थे तो 20 लाख ठीक है, पर कोई लोकप्रिय सितारा उनके साथ हो तो वह उसकी पारिश्रमिक से एक रुपये अधिक की डिमांड सीधे और साफ शब्दों में कर देते थे। उनकी शर्तों को मानकर फिल्म करानी हो तो ठीक नहीं तो आगे बढ़ो। शायद इसीलिए सुभाष घई ने अपनी फिल्म `सौदागर' में दिलीप कुमार के साथ इनको साइन किया था तो लोगों ने फिल्म पूरी होने पर संदेह प्रकट किया था। फिल्म `सौदागर' के कैरेक्टर की तरह ही वह स्वाभिमानी और जिद्दी थे। इस फिल्म के कैरेक्टर को उनके व्यक्तित्व का आईना कह सकते हैं। मजबूत इरादों वाले इस इंसान को किसी की मदद लेना कभी गवारा नहीं हुआ।



राजकुमार अपने निजी जीवन में भी राजकुमारों-सी जिंदगी जीने के आदि रहे। इस बात पर हमें एक पंच सितारा होटल की एक घटना याद आती है, होटल में कुछ दिन ठहरने के बाद राजकुमार होटल छोड़ने लगे तो उनका नौकर बची हुई शराब की बोतलें उठाने को आगे बढ़ा तो राजकुमार ने उसे यह कहकर रोक दिया कि इन्हें यहीं छोड़ दो ताकि जो दूसरा इस रूम में आए तो जाने कि इसमें से कोई राजकुमार गया है।

राजकुमार एक्टिंग से अधिक अपनी संवाद अदायगी के लिए मशहूर रहे। राजकुमार शुरू से ही शब्दों को चबा-चबाकर खींच के नहीं बोलते थे। डॉयलाग डिलीवरी का ये अंदाज तो उन्होंने अपने फिल्म कैरियर के उत्तरार्ध में विकसित किया। शायद यही कारण रहा कि बाद की फिल्मों में उनके द्वारा बोले गए संवाद आम दर्शकों की जुबान पर चढ़ गए और उनका प्रयोग उदाहरण के लिए किया जाने लगा, जैसे-

`छिपकली के बच्चे, कभी मगरमच्छ नहीं बन सकते, वह दीवार पर रेंग-रेंगकर मर जाते हैं।'

`जानी, जिनके घर शीशे के होते हैं, वह दूसरों के घर पर पत्थर नहीं फेंकते।'

फिल्म `वक्त' से इनकी एंट्री जूतों के क्लोज-अप से शुरू हुई तो उसके बाद हर दूसरी फिल्म में जूतों के क्लोज-अप के बाद ही इनके दर्शन होते। सिनेमाहाल में राजकुमार के जूतों पर जितनी तालियां पड़ीं उतने तो `शोले' के डॉयलाग पर भी नहीं।

सनक सम्राट के नाम से प्रसिद्ध राजकुमार अपने पीछे जितने किस्से-कहानियां छोड़ गए, शायद ही कोई उसकी बराबरी कर सके।

बात उन दिनों की है, `चम्बल की कसम' में राजकुमार और शत्रुघ्न सिन्हा साथ-साथ काम कर रहे थे। इन्होंने शत्रुघ्न सिन्हा को अपने निकट बुलाया और बोले, `ये कुछ बिस्किट हैं, इन्हें हमारे कुत्ते के लिए घर पर दे आओ, तुम्हें अच्छी बख्शीश मिलेगी।' इससे पहले की शत्रु की तरफ से कुछ धमाका होता सैट पर खड़ा एक सहायक [illegible] बैठा, `सर, ये शत्रुघ्न सिन्हा हैं, ये इस फिल्म [illegible] आपके साथ काम कर रहे हैं।' यह सुनकर राजकुमार यह कहकर आगे बढ़ गए कि, `अरे हां, लेकिन तुम्हारा चेहरा बहुत हल्का-फुल्का है। ख्याल में ही नहीं रहता, ऐसा करो अपनी एक फोटो हमें दे देना ताकि आइंदा से खयाल रख सकें हम।

कुछ इसी तरह की बात एक बार जीनत अमान के साथ घटी। इस फिल्म एक्ट्रैस को देखते ही राजकुमार बोल बैठे, `तुम्हारी फेस कटिंग तो अच्छी है फिल्मों में ट्राई क्यों नहीं करतीं?' जबकि उस वक्त जीनत अमान कई हिट फिल्में दे चुकी थी।

फिल्म `आदमी' देखने के बाद फोन द्वारा दिलीप कुमार को आधी रात को जगाकर यह कहते हुए बधाई संदेश दिया, `तुम्हारी फिल्म `आदमी' देखी, अच्छी एक्टिंग कर लेते हो, हमसे एक्टिंग के कुछ गुर ले लो और अच्छे एक्टर बन जाओगे।' फिल्म `आदमी' के लिए निर्माता एस.एस. वासन की पहली पसंद राजकुमार ही थे। राजकुमार को लेकर [illegible] तरह की ढेरों दंतकथाएं प्रचलित हैं। अगर उन सब का जिक्र किया जाए तो यह पूरी पत्रिका भी उसके लिए कम पड़ जाएगी। शेष फिर कभी, इस बार इतना ही।

एक बार जब उनकी बीमारी की खबर फैली थी तो राजकुमार ने कहा था, `हम राजकुमार हैं और हमें रोग भी होगा तो बड़ा-सा, राजकुमारों वाला' और वही हुआ राजकुमार की मृत्यु कैंसर जैसी घातक और जानलेवा बीमारी से ही हुई। `दिल एक मंदिर' में कैंसर ग्रस्त मरीज की भूमिका निभाने वाला ये हीरो निजी जीवन में इस असाध्य रोग से लड़ते-लड़ते आखिरकार हार गया।

- अरविंद सिंह युगांधर